Paper-one
दिनांक :- 10-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- B.A Part(II) प्रतिष्ठा इतिहास
(History Honours)

ताम्रपाषाण काल के संस्कृतियो के स्थल और पुरातात्विक स्त्रोत से प्राप्त स्थलो अभिलक्षणिक गुण और वस्तुओं से संबंधित और उसकी संस्कृतिक विशेषता :-

अब तक कुल 110 स्थल प्रकाश में आ चुके है। आलमगीरपुर, हस्तिनापुर और अहिच्छत्र में गैरिक मृदभांड संस्कृति के अवसान के पश्चात् कुछ अंतराल तक खोलीपान आ गया है और फिर आगे चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति का विकास हुआ है: जबकि अतरंजी खेड़ा से यह साक्ष्य प्राप्त होता है कि गैरिक मृदभांड संस्कृति तथा चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति के मध्य के काल में

2020

M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4
6	7	8	9	10	11
13	14	15	16	17	18
20	21	22	23	24	25
27	28	29	30	31	

18 काले एंव लाल मृदभाण्ड संस्कृति का भी चरण रहा था।

काले व लाल मृदभांड संस्कृति:

सर्वप्रथम 1960 में अंतरजीखेड़ा नामक स्थल से काले एंव लाल मृदभाण्ड संस्कृति का साक्ष्य प्राप्त हुआ। तत्पश्चात जोधपुरा एंव नोह से भी इस संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं

काले व लाल मृदभाण्ड संस्कृति का विशिष्ट लक्षण है बर्तन के अंदर का भाग तथा बाहर के भाग में किनारा काले रंग तथा शेष बर्तन लाल रंग से चित्रित है।

19 SUNDAY

यह मृदभाण्ड उत्तर में रोपड़ से लेकर दक्षिण में आदिचनाल्लूर तथा पश्चिम में तथा लाख बघाल से लेकर पूरब में पांडु राजार ढीबी तक प्राप्त हुए हैं। इनका समय परिप्रेक्ष्य भी काफी लंबी है जबकि 2400 ईसा पूर्व से लेकर

ईस्वी सन की आरंभिक शताब्दियों तक फैला है।

अंतरजीखेड़ा से गैरिक मृदभांड संस्कृति के पश्चात् काले एवं लाल मृदभाण्ड संस्कृति का साक्ष्य प्राप्त होता है।

ताम्र निधान संस्कृति –

ताम्र संचय का सबसे पहला साक्ष्य 1822 ई० में कानपुर के पास बिठुर से ताम्र मत्स्य माला के रूप में प्राप्त हुआ है। अब तक ताम्र संचय के कुल 85 स्थान प्रकाश में आए हैं। इन में ताम्र संचय का सबसे बड़ा भंडार मध्य प्रदेश गंगेरिया से प्राप्त हुए है।

गंगेरिया से कुल 424 उपकरण प्राप्त हुए है

ताम्र संचय के सबसे अधिक स्थल उत्तर प्रदेश से प्राप्त हुए है। कुल 33 स्थल मिले है। इटावा के पास

साईपाई नामक स्थल से ताम्र संचय के साथ गैरिक मृदभाण्ड भी प्राप्त होते है। इस आधार पर ताम्र संचय का संबंध गैरिक मृदभाण्ड से मान लिया गया।

चित्रित धूसर मृदभाण्ड (PGW) :-

चित्रित धूसर मृदभाण्ड का प्रारंभिक साक्ष्य 1946 में अहिच्छत्र से प्राप्त हुआ है। अब तक चित्रित धूसर मृदभाण्ड के कुल 750 स्थल प्रकाश में आ चुके है। इनमें लगभग 30 स्थलों की खुदाई हुई है। इनमें से चार स्थल :- भगवानपुर, दधेरी, नागर और कटपालन ऐसे है जिनमें चित्रित धूसर मृदभाण्ड के साक्ष्य मिलते है। फिर भी इन्हे परवर्ती हड़प्पा का विस्तार माना जाता है। क्योंकि यहाँ से लोहे के उपकरण प्राप्त नही होते है। चित्रित धूसर मृदभाण्ड से संबंधित सबसे बड़ा स्थल हरियाणा के पास कुरुक्षेत्र

चित्रित धूसर मृद्भाण्ड में मकान सरपत के बनाए जाते थे उन्हे मिट्टी से पाया जाता था। गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र से प्राप्त स्थलो मे लौह के उपकरण के मिले है। केवल हस्तिनापुर से लौह के उपकरणो का साक्ष्य प्राप्त नही होता है। खेती (कृषि) के खुदाई के पश्चात हस्तिनापुर से चावल तथा अतरंजी खेड़ा मे गेहूं व जौ का साक्ष्य मिला है। इसके अलावा अन्य स्थलो से अनाज के साक्ष्य नही मिले है।

उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भाण्ड (NBPW) इसका प्रारम्भिक साक्ष्य 1930 ई० में तक्षशिला से प्राप्त हुआ है। अब तक कुल 1500 स्थल प्रकाश में आए। इनमें 15 स्थलो की खुदाई हुई है। उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भाण्ड संस्कृति के चित्रित धूसर मृद्भाण्डो के ऊपर प्राप्त हुए हैं।

Scanned with CamScanner